3

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 4497

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल - छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8,7)

(क) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोयी नहीं,

सजा सहज सितार,

सुनी मैंने वह नहीं

जो थी सुनी झंकार

अथवा

जागी किसकी वाष्पराशि, जो सूने में सोती थी?

किसकी स्मृति के बीज उगे ये, सृष्टि जिन्हें बोती थी?

अरी वृष्टि, ऐसी ही उनकी दया-दृष्टि रोती थी,

विश्व-वेदना की ऐसी ही चमक उन्हें होती थी।

(ख) आह रे, वह व्यतीत जीवन !

तुम्हारी आँखों का बचपन !

साथ ले सहचर सरस वसन्त,

चंक्रमण करता मधुर दिगन्त,

गूँजता किलकारी निस्वन,

घपुलक उठता तब मलय-पवन।

अथवा

राजा रंक से बना करके यश, मान, मुकुट पहना करके,

बाँहों पर मुझे उठा करके, सामने जगत के ला करके,

करतब क्या-क्या न किया उसने, मुझको नव-जन्म दिया उसने।

2. "सखि! वे मुझसे कहकर जाते" गीत का मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

यशोधरा की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में संकलित "लहर" की कविताओं के आधार पर जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

"अरी वरुणा की शांत कछार" कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. निराला की काव्यभाषा की प्रमुख विशेषताओं पर सौदाहरण विचार कीजिए। (12)

अथवा

'वह तोड़ती पत्थर' कविता की मूल संवेदना का वर्णन कीजिए।

5. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान के योगदान का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

"रश्मिरथी" के तृतीय सर्ग का मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिये।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का निर्देशानुसार रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए? (6,6)

(क) मैं उन्मत्त प्रेम की लोभी
हृदय दिखाने आई हूँ,
जो कुछ है, वह यही पास है,
इसे चढ़ाने आई हूँ। (भक्तिभावना)

(ख) दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुंदरी
परी-सी धीरे धीरे धीरे। (बिम्ब और प्रतीक योजना)

(ग) जहाँ साँझ-सी जीवन-छाया,
ढो ले अपनी कोमल-काया,
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पाँति घनी रे! (भावार्थ)